201hi14

14

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

आपने एक पूर्व पाठ में प्रकृति की सुंदरता के बारे में पढ़ा। यह सच है कि स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु और हरा-भरा वातावरण हमारे दिल-दिमाग को तरोताज़ा कर देता है। सुंदर प्राकृतिक दृश्य हमारे मन को खुशी से भर देते हैं। लेकिन आज स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु और सुंदर प्राकृतिक दृश्य कम होते जा रहे हैं। जानते हैं क्यों? क्योंकि मनुष्य इनका उपयोग बड़ी बेहरहमी से कर रहा है। क्या पेड़ों को काटे जाने पर उनके रोने की आवाज़ आपने सुनी है? चौंक गए न? पर चौंकिए मत, आज प्रकृति अपने संरक्षण के लिए हमें पुकार रही है। इस पुकार को हमें भी उसी तरह सुनना चाहिए जैसे एक कवयित्री ने इस कविता में सुना है, आइए इसे पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- मानव-जीवन में प्रकृति की भूमिका का उल्लेख कर सकेंगे;
- प्रकृति के प्रति मनुष्य के कर्तव्य का वर्णन कर सकेंगे;
- सामाजिक तथा सृजनात्मक चिंतन के लिए संवदेनशीलता तथा समानुभूति का महत्त्व समझा सकेंगे;
- पर्यावरण-संरक्षण में अपनी भूमिका निर्धारित कर सकेंगे;
- उपभोक्तावाद की हानियों की व्याख्या कर सकेंगे;
- प्रकृति के मानवीकरण की सराहना कर सकेंगे;
- कविता के काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे।

14.1 मूल पाठ

आइए, इस कविता को एक बार ध्यान से पढ़ लेते हैं।

क्या तुमने कभी सुनी है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ?

क्या, होती है तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?

इस घाट अपने कपड़े और मवेशी धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?

कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठे पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक, कोई पत्थर?

सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख़?

ख़ून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को, अपने घर के पिछवाड़े?

थोड़ा-सा वक्त चुराकर बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करने वाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?

अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है!!

-निर्मला पुतुल

शब्दार्थ

चीत्कार	=	कष्ट या पीड़ा में चिल्लाने की आवाज़
धमस	=	चोट, आघात (किसी आघात की गूँज)
किस कदर	=	कितना अधिक
घाट	=	नदी किनारे का वह स्थान, जहाँ लोग नहाते-धोते हैं
मवेशी	=	पालतू पशु
अर्घ्य	=	जल या दूध आदि देवता को अर्पित करना
समाधि	=	ध्यान की मुद्रा
गुमसुम	=	चुपचाप, विचारों में खोई, स्तब्ध

14.2 आइए समझें

यह तो आप जानते ही हैं कि सभी प्राणियों में मनुष्य ही ऐसा है, जिसमें बुद्धि, विवेक और कल्पना-शक्ति है। इसीलिए, वह दूसरों में अपनी तरह प्राण देखता है, जड़-चेतन में दुख-सुख की कल्पना करके, उनके दुख को अपना मानकर उसे दूर करने का उपाय करता है। 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' एक ऐसी कविता है, जिसमें पेड़, नदी, पहाड़, हवा और पृथ्वी को मनुष्य के रूप में चित्रित किया गया है। साहित्य की भाषा में इसे 'मानवीकरण' कहते हैं, अर्थात् जो मानव नहीं है, जड़ है- कल्पना-शक्ति से उसे मानव जैसा व्यवहार करते दिखाना। आप एक अन्य कविता पढ़ रहे है:- 'बीती विभावरी जाग री!' उस कविता में प्राकृतिक सौंदर्य के विषय में बताने के लिए मानवीकरण किया गया है। इसी तरह, 'चंद्रगहना से लौटती बेर' में विवाह-समारोह के दृश्य के रूप में प्रकृति का चित्रण है। लेकिन, 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में मानवीकरण सौंदर्य-वर्णन के लिए नहीं किया गया है। इसमें प्रकृति तथा पृथ्वी के दुख का अहसास कराने के लिए मानवीकरण किया गया है।

चित्र 14.1

पेड़, नदी, पहाड़ और हवा हमसे अलग नहीं हैं, हमारे साथी हैं। हम इन पर निर्भर हैं। इनके बिना हमारा होना ही ख़तरे में है। इसलिए इनका दुख हमारा दुख है। आप जानते ही हैं कि पेड़, नदी, पहाड़, हवा आदि को मिलाकर पर्यावरण बनता है। 'पर्यावरण' शब्द 'परि' और 'आवरण' से बना है, जिसका अर्थ है- हमारे आस-पास की प्राकृतिक स्थिति। पर्यावरण प्रकृति का अमूल्य उपहार है। अपनी संतुलित ज़िंदगी के लिए मनुष्य पेड़-पौधों, जल, वायु, जीव-जंतुओं, पर्वत आदि पर निर्भर है, फिर भी ज़्यादा-से-ज़्यादा सुविधाओं के भोग के लालच में वह इनका अंधाधुंध दोहन अर्थात् अनावश्यक उपयोग करता आ रहा है। ऐसा करके वह प्राकृतिक आपदाओं, जैसे- बाढ़, भूकंप, सूखा आदि को न्योता देता है।

ऐसा नहीं है कि सभी लोग प्रकृति का दोहन ही कर रहे हैं। हममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो प्रकृति के कष्ट को महसूस करते हैं। वे सही अर्थों में मनुष्य हैं। आपने जो कविता

टिप्पणी

अभी पढ़ी, उसमें प्रकृति के कष्टों और उसके भय का चित्रण किया गया है। आवश्यकता है कि इस कष्ट और भय को हम सभी महसूस कर सकें।

आइए, अब हम कविता की आरंभिक नौ पंक्तियों का भाव समझने के लिए इन्हें एक बार फिर से पढ़ लें।

14.2.1 अंश-1

कवयित्री कल्पना करती है कि मनुष्य की तरह पेड़ भी भयभीत होते हैं। वे भय से चीख़ते-चिल्लाते भी हैं। वे भी बचाव के लिए पुकारते हैं। जैसे हम भयानक सपने देखते हैं, तो डर से चिल्ला पड़ते हैं, वैसे ही पेड़ों को भी सपने आते हैं। वे सपने बड़े भयानक हैं। उनके सपनों में चमकती हुई कुल्हाड़ियाँ पेड़ों को काटने के लिए तत्पर हैं और पेड़ इन कुल्हाड़ियों के डर से चीख़ रहे हैं। कविता की इन पंक्तियों में कुछ प्रश्न पूछे गए हैं। कवयित्री पेड़ों के पक्ष में ये सवाल पूछ रही है। उसके सवाल उस 'सभ्य समाज' से है, जो पेड़ों के साथ नहीं जीता, बल्कि पेड़ों को अपने उपयोग के लिए नष्ट करता है। ये प्रश्न हम सबसे भी किए गए हैं।

क्या तुमने कभी सुनी है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से पेड़ों की चीत्कार?

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ?

क्या, होती है तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

कविता में इस दृश्य की कल्पना की गई है, लेकिन वास्तविकता में यह केवल कल्पना नहीं, बल्कि सच है। इन पंक्तियों में एक बहुत बड़ी चिंता व्यक्त की गई है। वह चिंता है- घटते हुए वृक्ष, घटती हुई हरियाली और मानव-जीवन पर इसका विनाशकारी प्रभाव। सोचिए कि इस स्थिति का ज़िम्मेदार कौन है? इसके ज़िम्मेदार हम सभी हैं। हमें भय से चीत्कार करते पेड़ों के कष्ट से कोई सरोकार नहीं। हम बस अपने स्वार्थ में अंधे हैं। भविष्य और दूसरों की चिंता किए बिना चीज़ों को ज़्यादा-से-ज़्यादा भोग लेने की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति आजकल इन्सानों में बढ़ती जा रही है। इस आदत का कुप्रभाव प्रकृति पर भी पड़ता है। यह प्रकृति-विरोधी रवैया पूरी तरह से स्वार्थ पर आधारित है।

सही मायने में मनुष्य वह है, जो अपने स्वार्थ को छोड़कर भय से चीख़ते पेड़ों के दुख को महसूस करे और इन्हें बचाने का प्रयास करे। इसीलिए, कवयित्री प्रश्न करती है- 'क्या तुमने कभी सुनी है, सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से पेड़ों की चीत्कार?' आप समझ गए होंगे कि यह वास्तव में प्रश्न नहीं, उत्तर भी है। कई बार हम किसी बात के आग्रह के लिए उसे प्रश्न के रूप में रखते हैं। कवयित्री का आग्रह है कि हमें भयभीत पेड़ों की चीत्कार महसूस करनी चाहिए। वैसे भी पेड़ों पर आया संकट मनुष्यता पर घिरा संकट है और इस तरह पेड़ों का भय वास्तव में मनुष्य का ही भय है। आख़िर पेड़ नहीं रहेंगे, तो मनुष्य रहेगा क्या?

कवयित्री ने पेड़ के अंगों में मानव-अंगों की कल्पना की है। कविता में की गयी कल्पना हमें दूसरों के दुख से जोड़ती है, हमें दूसरों से समानुभूति रखना सिखाती है और अधिक संवेदनशील बनाती है। यह कविता हमें प्रकृति के दुख से जोड़कर अधिक सजग और उदार मनुष्य बनाती है।

टिप्पणी

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

आपने यह महसूस किया होगा कि जब वर्षा होती है, तो पेड़ साफ़-सुथरे, हरे-भरे हो जाते हैं। जब हवा चलती है, तो पेड़ प्रसन्न होकर झूमने लगते हैं। क्या आपने पेड़ों में मनुष्य की कल्पना नहीं की? क्या कभी ऐसा नहीं हुआ कि पेड़ों की टहनियाँ आपको उनके हाथों-सी लगी हों? कवयित्री ने इन पंक्तियों में बहुत ही मार्मिक यानी मन को छू लेने वाली कल्पना की है। पेड़ कुल्हाड़ी की चोट की आशंका से भयभीत होकर बचाव के लिए पुकारने लगता है। पेड़ की काँपती हुई टहनियाँ मानो बचाव के लिए पुकारते उसके हजारों हाथ हैं। मानो वे हमारी ओर उठे हैं कि हम पेड़ को बचाएँ। कवयित्री चाहती है कि हम पेड़ों के प्रति संवदेनशील हों और उन्हें कटने से बचाएँ।

जब हमारा कोई आत्मीय छोड़कर चला जाता है तो बेहद पीड़ा होती है वैसी ही पीड़ा किसी पेड़ के कटने पर भी होनी चाहिए, क्योंकि उनपर हमारा जीवन निर्भर है, वे हमारी जीवनी शक्ति हैं। उनमें भी जीवन होता है। अतएव किसी पेड़ के कटकर धरती पर गिरने पर उसकी आवाज़ उसी तरह ठेस पहुँचाएगी, मानो हमारा ही कोई हिस्सा कटकर गिर गया हो। धरती पर मज़बूती से खड़ा, हवा के स्पर्श से झूमता हुआ पेड़ कितना अच्छा लगता है! लेकिन, वही पेड़ जब धरती पर गिर जाए, तो हमें कितना आघात पहुँचाता है। क्या हम सभी के लिए इस चोट को महसूस करना ज़रूरी नहीं है?

यह भी जानिए

प्रकृति का आवश्यकता से अधिक उपभोग करने वालों और प्रकृति को हानि पहुँचाने वालों के विरोध का लंबा इतिहास हमारे देश में रहा है। आइए, इससे संबंधित कुछ बातें जानें :

'चिपको आंदोलन' का नाम तो आपने सुना ही होगा। क्या आप जानते हैं कि यह आंदोलन हिमालय पर स्थित गढ़वाल क्षेत्र के चमोली ज़िले के एक गाँव रैंणी से शुरू हुआ था। इस गाँव की एक साधारण-सी दिखने वाली महिला गौरा देवी ने वनों के महत्त्व और प्रकृति की पीड़ा को समझ लिया था। ठेकेदार के आदमी नीलाम हुए 2451 पेड़ों को काटने आए थे। गौरा देवी ने उनसे कहा कि यह जंगल और ये पेड़ हमारे देवता हैं। इन पर हमारा जीवन आश्रित है, इसलिए हम इन्हें नहीं काटने देंगे। यह कहकर गौरा देवी और उनकी सहेलियाँ पेड़ों से चिपककर खड़ी हो गईं। यही चिपकना 'चिपको आंदोलन' बन गया। इस आंदोलन का नारा है-

क्या हैं जंगल के उपकार– मिट्टी, पानी और बयार।
मिट्टी, पानी और बयार– ज़िंदा रहने के आधार॥

सन् 1987 में इस आंदोलन को 'सम्यक जीविका पुरस्कार' (Right Livelihood Award) प्रदान किया गया।

'चिपको आंदोलन' को लोकप्रिय बनाने के लिए सुंदरलाल बहुगुणा विश्व-भर में 'वृक्षमित्र' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

क्रियाकलाप-14.1

वृक्षों को बचाने के लिए किए जा रहे प्रयासों के विषय में आपने पढ़ा। अपने आस-पास पेड़ों के साथ किए जा रहे व्यवहार को ध्यान से देखिए। इसके बाद पेड़ों की रक्षा के लिए कम-से-कम तीन ऐसे उपाय लिखिए, जिन्हें आप अपनाना चाहेंगे:

उपाय-1 :.....

.....

उपाय-2 :.....

.....

उपाय-3 :.....

.....

14.2.2 अंश-2

आइए, अब 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता का दूसरा अंश फिर से पढ़ें। यह अंश किसके दुख को व्यक्त करता है? जी हाँ, हमारी धरती की जीवन-रेखा अर्थात् नदियों के दुख को। जिस तरह पेड़ अपने फल दूसरों को दे देते हैं, वैसे ही नदियाँ भी अपना जल दूसरों को सौंप देती हैं। वे अपने जल के रूप में हमें जीवन देती हैं, पर हम उन्हें ही बरबाद कर रहे हैं। आपने देखा होगा कि बड़े-बड़े कारखानों का गंदा पानी नदियों में गिराया जाता है। कूड़ा भी नदियों में डाल दिया जाता है। श्रद्धा तथा धर्म के नाम पर लोग नदियों में ऐसी चीज़ें बहाते हैं, जिनसे नदियाँ गंदगी से भर जाती हैं। प्रतिबंध के बाद भी साबुन लगाकर नहाते हैं। जो नदियाँ कभी स्वच्छ पानी को लेकर कल-कल करती बहती थीं, आज वे गंदे नाले बनकर रह गई हैं। कवयित्री इसी बात से दुखी है।

चित्र 14.2

वह हम सबसे पूछती

टिप्पणी

पेड़ों के लाभ-

- ऑक्सीज़न के बड़े स्रोत होते हैं।
- वर्षा में ज़मीन की उपजाऊ परत को कटने से बचाते हैं।
- भू-जल के स्तर बनाए रखने में सहायक होते हैं।
- जल-चक्र के नियमन में सहायक होते हैं।
- फूल फल देते हैं।
- जैव-विविधता बनाए रखते हैं।
- छाया और ठंडक देते हैं।
- जड़ी-बूटियों, दवाइयों के स्रोत होते हैं।
- वातावरण को धूल, प्रदूषण आदि से बचाते हैं।
- इनकी सूखकर गिरी टहनियाँ ईंधन के रूप में काम आती हैं।
- धरती का सौंदर्य बढ़ाते हैं।

टिप्पणी

सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?

इस घाट अपने कपड़े और मवेशी धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता
को अर्घ्य?

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

है 'सुना है कभी रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप किस कदर रोती हैं नदियाँ?' ऐसा लगता है कि कवयित्री ने नदी का रोना सुना है। नदी के साथ वह खुद भी रोती है। जिनका जीवन नदियों, पेड़ों और वनस्पतियों पर सीधे-सीधे निर्भर है, वे इनकी दुर्दशा पर दु:खी होते हैं। कवयित्री उसी दुख का बोध शहरी लोगों और शिक्षित नागरिकों को कराना चाहती है। यहाँ पर पेड़ की तरह नदी का भी मानवीकरण किया गया है। मनुष्य जब किसी गहरी पीड़ा से ग्रस्त होता है और उसके दुख को समझने वाला कोई नहीं होता, तो वह एकांत में सिसक-सिसक कर रोता है। नदी भी ऐसा ही करती है। वह मुँह ढाँपकर रोती है। नदी भी तो आंतरिक रूप से पीड़ित है। उसकी पीड़ा यह है कि वह हमें जीवन देने के लिए अपना जल हमें दे देती है और हम हैं कि उसे नष्ट कर रहे हैं। यहाँ पर नदियों के घटते पानी, उनमें बढ़ते प्रदूषण को लेकर दुख प्रकट किया है।

कविता के इस अंश में नदी के दो किनारों का चित्रण किया गया है। एक किनारा वह है, जहाँ पर कोई स्वार्थी व्यक्ति अपने मवेशी अर्थात् आजीविका के लिए पाले जाने वाले पशुओं को नहला रहा है और कोई साबुन से अपने मैले कपड़े धो रहा है और इस प्रकार वे दोनों नदी के जल को गंदा कर रहे हैं। दूसरे किनारे पर कोई प्यासा पानी पी रहा है और कोई स्त्री किसी देवता को अर्घ्य दे रही है अर्थात् देवता को जल चढ़ाकर पूजा कर रही है। आप जानते ही हैं कि पीने के लिए साफ़ पानी की ज़रूरत है। देवता को चढ़ाए जाने वाला जल भी स्वच्छ एवं पवित्र होना चाहिए। किंतु, ऐसा प्रदूषित जल पीना हानिकारक होगा और भला देवता को भी गंदा जल कैसे चढ़ाया जा सकता है? इसलिए पानी को प्रदूषित करने वाले लोगों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि नदियों अथवा पानी के साथ उनके द्वारा किए गए व्यवहार से दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। कवयित्री ऐसे लोगों से प्रश्न पूछकर उन्हें पानी के साथ किए गए व्यवहार के लिए शर्मिंदा करना चाहती है।

यह कविता हमें कई बातों पर सोचने के लिए प्रेरित करती है। कभी-कभी हम ऐसी चीज़ों का दुरुपयोग करते हैं, जिन पर दूसरों का भी अधिकार है। क्या आप जानते हैं कि हमें सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि एक के अधिकारों के साथ दूसरों के भी अधिकार जुड़े होते हैं। इसलिए अधिकार कुछ कर्तव्यों की भी माँग करते हैं। इस बात को आप 'आज़ादी' नामक कविता में भी पढ़ रहे हैं। उसमें आज़ादी का वास्तविक अर्थ समझाया गया है।

आप समझ गए न कि जो चीज़ें हमें प्रकृति ने दी हैं, उन पर केवल हमारा ही अधिकार नहीं है, आने वाली पीढ़ियों का भी है। हो सके, तो प्रकृति द्वारा दी गई संपत्ति में बढ़ोत्तरी ही करनी चाहिए। इससे आने वाली पीढ़ियाँ हमें याद करके खुश होंगी और वे भी प्रकृति के साथ वही व्यवहार करेंगी।

कविता के इस अंश के माध्यम से कवयित्री हमें अपने कर्त्तव्यों की याद दिलाती है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम नदियों को साफ़ रखें, उन्हें सूखने से बचाएँ, जल के अन्य स्रोतों,

टिप्पणी

जैसे–तालाब, झील, कुएँ आदि को बढ़ावा दें, ताकि नदियों पर निर्भरता थोड़ी कम हो सके और उनमें पानी बना रहे। हम जब भी पानी का उपयोग करें, तो यह याद रखें कि इसकी ज़रूरत औरों को भी है। संसार की बहुत बड़ी आबादी प्रदूषित पानी का उपयोग करने के लिए विवश है। विश्व में प्रतिदिन लगभग पच्चीस हज़ार लोग पानी से होने वाले रोगों से मर जाते हैं।

पाठगत प्रश्न-14.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मानवीकरण का अर्थ है–

   (क) जो मानव नहीं, उसे मानव के रूप में कल्पित करना ☐

   (ख) दूसरों के सुख-दुख को अपना सुख-दुख मानना ☐

   (ग) पेड़, पहाड़, नदी आदि के प्रति चिंता प्रकट करना ☐

   (घ) सच्चा मनुष्य बनने की क्रिया ☐

2. पर्यावरण का अर्थ है-

   (क) मनुष्य के लिए अनिवार्य आस-पास की प्राकृतिक स्थिति ☐

   (ख) प्राकृतिक आपदाएँ, जैसे- भूकंप, बाढ़, सूखा आदि ☐

   (ग) वृक्षों, नदियों, पहाड़ों को मनुष्य के रूप में चित्रित करना ☐

   (घ) प्रकृति को सूक्ष्मता के साथ देखने की क्षमता ☐

3. कविता में पेड़ों के हज़ारों हज़ार हाथों के हिलने से अभिप्राय है–

   (क) खुशी से झूम उठना ☐ (ग) तूफ़ान से काँपना ☐

   (ख) रक्षा की गुहार लगाना ☐ (घ) हवा से थिरकना ☐

4. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (√) और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए :

   (क) 'नदियाँ मुँह ढाँपकर रोती हैं' का अर्थ है– उनकी पीड़ा को कोई समझ नहीं रहा। ☐

   (ख) 'नदियाँ मुँह ढाँपकर रोती हैं' में मानवीकरण है। ☐

   (ग) प्राकृतिक संसाधनों का मनमाना उपयोग हमारा अधिकार है। ☐

   (घ) 'सोचा है कभी कि उस घाट...' प्रश्न के द्वारा कवयित्री घाट की सराहना करना चाहती है। ☐

कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठे पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर
सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से टूटकर
बिखरते पत्थरों की चीख़?

14.2.3 अंश-3

आपने पेड़ों, नदियों और पर्वतों से संबंधित अनेक कथाएँ सुनी होंगी। बहुत पहले से ही हमारी कथाओं में इनका मानवीकरण किया जाता रहा है। पर्वतों के बारे में तो यह कल्पना भी की गई है कि उनके पंख होते थे। वे इधर-उधर उड़ते फिरते थे। 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' में पहाड़ के मानवीकरण का उद्देश्य अलग ही है। आइए, इसे समझें।

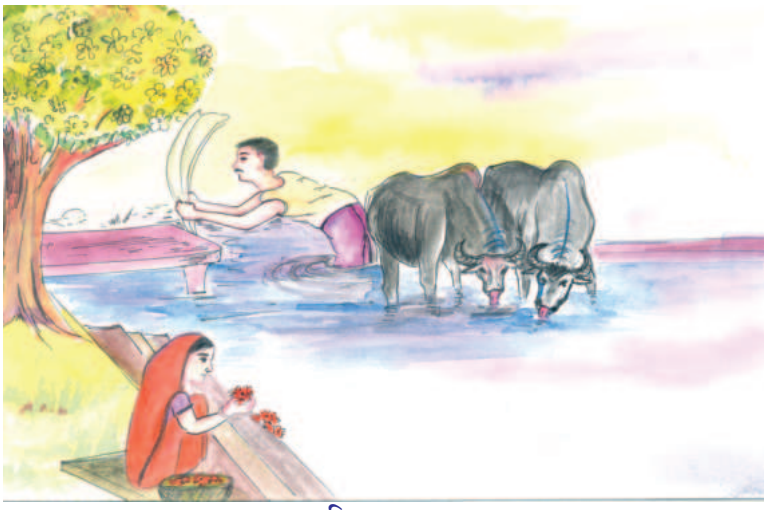

चित्र 14.3

जिस तरह कविता में पहले कुछ सुनने, कुछ देखने और कुछ सोचने का आग्रह किया गया है, वैसे ही कुछ महसूस करने पर भी बल दिया गया है। गिरते हुए पेड़ की धमस के संदर्भ में भी महसूस करने का एक रूप आ चुका है। इस अंश में पहाड़ की भयंकर यातना को महसूस करने का आग्रह किया गया है। आपने मनुष्य के लिए तो 'दिल दहलना' का प्रयोग सुना ही होगा। जब कोई भयानक स्थिति या विपत्ति आती है तो उसे देखकर या उसका सामना करते हुए व्यक्ति का दिल दहलता है अर्थात् वह भीतर तक हिल जाता है या काँप जाता है।

पहाड़ मौन समाधि लिए बैठा है अर्थात् विशाल पहाड़ की स्थिरता को देखकर लगता है, जैसे वह मौन समाधि में बैठा हो। अनेक चित्रों में आपने ऋषि-मुनियों को इस तरह बैठे देखा होगा। पहाड़ भी इस मुद्रा में बैठे दिखते हैं न? कवयित्री की इस सुंदर कल्पना को असुंदर बनाता है– मनुष्य का पहाड़ के साथ किया गया व्यवहार। मनुष्य एक तरफ़ निर्माण करता है, तो दूसरी तरफ़ विनाश भी करता है। मनुष्य ऊँची-ऊँची इमारतें बनाने के लिए पत्थर, सीमेंट आदि पाने को पहाड़ में डाइनामाइट लगाकर उसमें विस्फोट करता है। जब पहाड़ विस्फोट से टूटता है, तो ऐसा लगता है, मानो मनुष्य के इस व्यवहार से उसका सीना दहल गया हो। कोई ठोस चीज़ बहुत तेज़ आघात या चोट से टूटती है, तो उसके कुछ टुकड़े तेज़ गति से बहुत दूर तक इधर-उधर जा गिरते हैं। इसे इन टुकड़ों का छिटकना कहते हैं। पहाड़ के सीने पर मनुष्य तेज आघात करता है, इससे उसके पत्थर छिटककर दूर गिरते हैं। कविता की इन पंक्तियों में पहाड़ के प्रति मनुष्य के क्रूर व्यवहार की ओर संकेत किया गया है।

टिप्पणी

पिछले अंश में कवयित्री ने नदियों की रुलाई सुनने का आग्रह किया है, तो इस अंश में हथौड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख़ को सुनने का।

यह भी जानिए

- क्या आप जानते हैं कि पौधारोपण करके बंजर हुई धरती को फिर से हरा-भरा बना सकते हैं। वर्षा के जल का संरक्षण करके और तालाब-बावड़ियाँ बनाकर या उन्हें बचाकर पानी की कमी को दूर कर सकते हैं। लेकिन, यदि पहाड़ एक बार नष्ट हो गए, तो उन्हें फिर से उत्पन्न नहीं किया जा सकता।
- पहाड़ को प्राचीन समय में ही 'भूधर' नाम दे दिया गया था। भूधर का अर्थ है- भूमि को धारण करने वाला। यदि पहाड़ न हों, तो धरती के भीतर होने वाली हलचलें, गतिविधियाँ, गैसें आदि धरती को नष्ट कर सकती हैं। पहाड़ इन आंतरिक हलचलों से धरती की रक्षा करते हैं। वे इन विनाशकारी हलचलों को ज्वालामुखी तथा अपने शिखरों के माध्यम से बाहर निकाल देते हैं, इसलिए उन्हें 'भूधर' कहा जाता है।
- पहाड़ों के जंगल से लकड़ी के साथ-साथ बहुमूल्य खनिज पदार्थ भी मिलते हैं।

क्रियाकलाप-14.2

पर्वत मनुष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत है। विशालता, महानता और हौसले के लिए पर्वत जैसी उपमा किसी और से नहीं दी जा सकती। ऊँचाई और बड़प्पन के संदर्भ में भी पर्वत की बात की जाती है, कुछ मुहावरे देखिए:

- पहाड़ टूटना
- पहाड़ से टक्कर लेना
- खोदा पहाड़ निकली चुहिया

कम-से-कम तीन ऐसे मुहावरे लिखिए, जिनमें पहाड़ या पर्वत की विशालता का उल्लेख हो।

1.....2.....3.....

14.2.4 अंश-4

आपने सुना होगा कि ख़ून की उल्टियाँ एक भयंकर रोग का लक्षण होती हैं। वह भयंकर रोग है– टी.बी.। अर्थात् ट्यूबर क्लोसिस। इसे क्षय रोग, यक्ष्मा या तपेदिक भी कहते हैं। यह प्राय: फेफड़ों का रोग है और तब होता है, जब फेफड़ों को स्वच्छ वायु न मिले।

ख़ून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को, अपने
घर के पिछवाड़े

टिप्पणी

वायु-प्रदूषण का कारण क्या है? बड़े-बड़े कारखाने, उनमें बड़ी-बड़ी मशीनें, धुआँ उगलती चिमनियाँ, सड़कों पर वाहनों की लंबी-लंबी कतारें। वायु-प्रदूषण से खुद वायु ही रोगी हो जाती है, इसीलिए कवयित्री ने हवा को ख़ून की उल्टियाँ करते दिखाया है।

कविता के इस अंश में एक शब्द आया है- पिछवाड़े। यहाँ पर इस शब्द का प्रयोग विशेष उद्देश्य से किया गया है। आप इस शब्द का अर्थ तो जानते ही होंगे, जी हाँ- घर के पीछे का हिस्सा। हमारा सारा ध्यान मुख्य द्वार की सजावट और सफ़ाई पर रहता है। पिछवाड़े की हम चिंता नहीं करते। वहाँ कूड़ा फेंकते हैं। इससे गंदगी-बदबू फैलती है। इसी प्रकार, मनुष्य विकास के बड़े-बड़े दावे करता है। अपनी उपलब्धियाँ गिनाता है। जो सुविधाएँ उसने प्राप्त की हैं, उनको बढ़ा-चढ़ाकर दिखाता है। लेकिन, दीखना एक बात है और होना कुछ और। कबूतर के आँख मूँदने से जैसे बिल्ली उसे खाना नहीं छोड़ देती, वैसे ही बाहर की सफ़ाई भीतर की गंदगी को कम नहीं कर सकती और उसके दुष्परिणामों से हमें बचा नहीं सकती। इन पंक्तियों में विकास-कार्यों से फैलने वाली गंदगी अर्थात् प्रदूषण की आलोचना की गई है। प्रदूषित हवा गंभीर रोगों का कारण बनती है। इसीलिए, यहाँ हवा को प्रदूषित होने से बचाने का आग्रह है।

पाठगत प्रश्न-14.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. हृदय-विदारक का अर्थ देने वाला मुहावरा कौन-सा है–

   (क) सीने पर पहाड़ रखा होना ☐ (ख) छाती पर साँप लोटना ☐

   (ग) दिल दहलना ☐ (घ) कलेजे पर पत्थर रखना ☐

2. 'ख़ून की उल्टियाँ करते... अपने घर के पिछवाड़े' पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री–

   (क) चंद लोगों के विकास की यातना झेलने वाले वर्ग की पीड़ा का संकेत करती है। ☐

   (ख) घर के पिछले भागों को साफ़-सुथरा रखने का आग्रह करती है। ☐

   (ग) प्रकृति पर मनुष्य की विजय का उद्घोष करती है। ☐

   (घ) (क) और (ग) दोनों ☐

3. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (√) और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए :

   (क) हमें जल का उपयोग करते हुए भावी पीढ़ी का ध्यान रखना चाहिए। ☐

टिप्पणी

(ख) कवयित्री ने विकास के लिए पहाड़ों को विस्फोट से उड़ाना मनुष्य की मजबूरी बताया है। ☐

(ग) पहाड़ पृथ्वी की रक्षा के लिए आवश्यक हैं, इसलिए इन्हें 'भूधर' भी कहते हैं। ☐

(घ) व्यक्तिगत स्वार्थ प्राकृतिक संसाधनों का सबसे बड़ा दुश्मन है। ☐

14.2.5 अंश-5

आइए, कविता की अंतिम पाँच पंक्तियाँ फिर से पढ़ लेते हैं।

इन पंक्तियों में कवयित्री ने पृथ्वी को बूढ़ी औरत के रूप में प्रस्तुत करते हुए उसके दुख को प्रकट किया है। साथ ही मनुष्य होने का वास्तविक अर्थ भी बताया है।

थोड़ा-सा वक्त चुराकर बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करने वाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?
अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है!!

हम देखते हैं कि आजकल अधिकतर लोग ज़्यादा से ज़्यादा सुविधाएँ प्राप्त करने की होड़ में व्यस्त हैं। इसी के चलते उन लोगों ने अपने लिए अनेक उलझनें खड़ी कर ली हैं। अब उनके पास मानवीय तथा बेहद ज़रूरी कार्यों के लिए भी समय नहीं है। इसका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है। अपने आस-पास के कुछ घरों में बुज़ुर्गों को देखें- उन्होंने अपनी संतान को पाल-पोस कर बड़ा किया और अब उनकी संतान के पास इतना भी समय नहीं है कि वह उनकी देखभाल और सेवा कर सके, उनसे बात करके उनका दुख-सुख पूछे। ऐसे में ये बड़े-बूढ़े बहुत उदास, चुप तथा दुखी रहते हैं। इन बुज़ुर्गों की तरह ही हमारी पृथ्वी की स्थिति हो गयी है।

इस कविता का शीर्षक ही है- 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख।' सवाल उठता है कि पृथ्वी को यहाँ पर बूढ़ी क्यों कहा गया है? इसलिए कि यदि पेड़-पौधे कम हो रहे हों, नदियाँ सूख रही हों, पहाड़ों को नष्ट किया जा रहा हो, पानी गंदा हो रहा हो, हवा प्रदूषित हो रही हो तो पृथ्वी कैसी लगेगी? बूढ़ी ही लगेगी न? वास्तव में, मुँह ढाँपकर रोने और पिछवाड़े खाँसने वाली भी यही 'बूढ़ी' है, क्योंकि नदी, पेड़, हवा आदि इसी पृथ्वी के अंग हैं। हम देखते हैं कि शरीर का ध्यान न रखने से बुढ़ापे में दाँत गिर जाते हैं, शरीर पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, केश सफ़ेद हो जाते हैं, शरीर रोगी हो जाता है। इसी प्रकार हरियाली, शुद्ध पानी, स्वच्छ हवा, विशाल पर्वतों के बिना धरती भी बंजर, रूखी और रोगी हो जाती है। मनुष्य अपने आपको चुस्त-दुरुस्त और स्वस्थ बनाए रखने के लिए अनेक उपाय करता है। वह सुबह-शाम सैर करता है, व्यायाम करता है और खान-पान का ध्यान रखता है। क्या उसे इतना ही ध्यान धरती का भी नहीं रखना चाहिए? मनुष्य चाहे तो धरती को असमय के बुढ़ापे से बचा सकता है अर्थात् हरा-भरा और प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न बना सकता है।

क्रियाकलाप-14.3

वायु-प्रदूषण के कुछ कारणों के विषय में आप जान चुके हैं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक कारण हो सकते हैं, जिन्हें आप अपने आस-पास देखते हैं। इनमें से किन्हीं दो का उल्लेख करते हुए उन्हें रोकने के लिए पोस्टर तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

14.3 भाव-सौंदर्य

आइए, एक बार पूरी कविता को एक साथ पढ़कर उस पर विचार करें। इस कविता में अनेक प्रश्न हैं। इन प्रश्नों को एक बार फिर से याद कीजिए। इन प्रश्नों के माध्यम से कुछ सुनने, देखने, महसूस करने, सोचने और थोड़ा-सा समय निकालकर बतियाने का आग्रह किया गया है। भला किनके बारे में? ज़ाहिर है कि पेड़, नदी, पहाड़, हवा के बारे में और मूल रूप से उस पृथ्वी के बारे में, जिसके ये सब अवयव / अंग हैं। पेड़ विपत्ति में हैं, नदी ... पहाड़ धैर्यवान सज्जन के रूप में हैं, हवा रोगी है, तो पृथ्वी बूढ़ी। आप जानते हैं कि मनुष्य को प्रकृति की सर्वोत्तम रचना माना जाता है। क्यों? इसलिए कि मनुष्य के पास बुद्धि है, विवेक है, और है संवेदनशीलता। इसी संवेदनशीलता के चलते मानव-मूल्यों का निर्माण हुआ है। विपत्ति में पड़े हुए, सज्जन, रोगी और बुज़ुर्ग की रक्षा करना, उनकी सेवा करना मानव-धर्म है। कवयित्री कहती है कि यदि तुमने यह सब नहीं किया, तो क्षमा करना, मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है! जानते हैं ऐसा कवयित्री ने क्यों कहा? क्योंकि मनुष्य से ही आशा की जाती है कि वह पृथ्वी का दुख समझे। ऐसी संवेदनशीलता मनुष्य में ही होती है।

लेकिन, यह संदेह कवयित्री ने बड़ी ही विनम्रता से, समझाने के अंदाज़ में किया है। वह क्षमा माँगते हुए यह बात कहती है कि वह यह बात कहना तो नहीं चाहती, पर धरती पर आए संकट के कारण उसे विवश होकर यह कहना पड़ रहा है।

14.4 भाषा-सौंदर्य

इस कविता में भावों को कहने के लिए कम-से-कम शब्दों का उपयोग किया गया है। आपने यह भी देखा कि आरंभ से अंत तक बातचीत की शैली है। कवयित्री अपने पाठक को संबोधित करती है। वह पाठक से अनेक प्रश्न पूछती है। अर्थात्, कविता प्रश्न-शैली में है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि ये सामान्य ढंग के प्रश्न नहीं हैं। प्रश्नों को पूछने की शैली ऐसी है कि इनमें कवयित्री का सुझाव निहित है। वह अपने पाठकों से चाहती है कि वे कुछ करें। वह कुछ क्या है, यह आप समझ ही चुके हैं।

टिप्पणी

कभी-कभी बातचीत करते हुए आप भी सुनने वाले के सामने प्रश्न के माध्यम से किसी कार्य को करने का प्रस्ताव रखते होंगे। जैसे, आप किसी से कहें- 'क्या तुमने ताजमहल देखा है?' तो आपकी इच्छा यह होती है कि सुनने वाला ताजमहल देखे। 'क्या तुम शाम को आ सकते हो?' 'क्या तुम पटना जा सकते हो?', 'क्या आपके पास पेन है?' आदि वाक्य ऐसे ही हैं। कवयित्री ने इस शैली का उपयोग पूरी कविता में किया है। इस शैली से कविता का प्रभाव और सौंदर्य बढ़ गया है। यह शैली कविता के उद्देश्य को व्यक्त करने में भी सहायक है।

आपने यह भी ध्यान दिया होगा कि इस कविता में दृश्यात्मकता है अर्थात् इसकी पंक्तियाँ चित्रों का काम करती हैं। जैसे- कुल्हाड़ियों के भय से चीत्कार करते पेड़, पेड़ की हिलती टहनियों में बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ, मुँह ढाँपकर रोती नदी, मौन समाधि लिए बैठे पहाड़ का सीना, खून की उल्टियाँ करती हवा और गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी। इस चित्रात्मकता का बहुत बड़ा कारण इन स्थलों पर प्रयुक्त मानवीकरण भी है।

कविता के अंतिम अंश में कवयित्री ने क्षमा माँगी है। आपको लग सकता है कि कवयित्री ने तो ऐसा कोई काम किया नहीं कि क्षमा माँगनी पड़े। वास्तव में यह सुनने वाले की आलोचना करने, उसकी कमी बताने और उसे नसीहत या शिक्षा देने का एक ढंग है। जब आप अपने से बड़े और छोटे तथा बराबर वाले से सहमत नहीं होते, तो ऐसे प्रयोग करते हैं, जैसे-

क्षमा कीजिएगा! आपकी यह बात ठीक नहीं। (बड़े से)

क्षमा करना! तुम यह ठीक नहीं कर रहे। (बराबर वाले या छोटे से)

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' में कवयित्री ने भावों के अनुकूल भाषा-प्रयोग किया है। जैसा कि आप पढ़ चुके हैं- चीत्कार, पुकारते, धमस, रात का सन्नाटा, दहलना, चीख़, गुमसुम आदि भाव-विशेष की अभिव्यक्ति करते हैं। एक शब्द है–'बतियाना'। 'बात' संज्ञा शब्द है। इस 'बात' से 'बतियाना' बना है। संज्ञा को 'नाम' भी कहते हैं। यहाँ संज्ञा शब्द बात का प्रयोग क्रिया की 'धातु' के रूप में हुआ है, अतः यह 'नाम धातु क्रिया' है। ऐसे ही अन्य शब्दों पर गौर करें :

धकियाना (धक्का से), लतियाना (लात से), हथियाना (हाथ से) आदि।

पाठगत प्रश्न-14.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में कौन-सी विशेषता नहीं मिलती?

(क) मानवीकरण (ख) प्रश्न शैली

(ग) दृश्यात्मकता (घ) ओजस्विता

2. मानवीकरण नहीं है-

(क) पेड़ों का चीत्कार (ख) नदियों का रोना

(ग) मौन समाधि लिए बैठा पहाड़ (घ) पेड़ की हिलती टहनियाँ

आपने क्या सीखा

- पर्यावरण मानव-जीवन के लिए अनिवार्य है। पर्यावरण के असुंतलित होने से मानव-जीवन पर अनेक रूपों में संकट आता है।
- पेड़-पौधों, नदियों, पर्वतों और हवा को नष्ट एवं प्रदूषित होने से बचाना मनुष्य का कर्तव्य है। इस कर्तव्य का पालन करके ही मानव सहित सभी प्राणियों की रक्षा की जा सकती है और पृथ्वी के सौंदर्य को बचाया जा सकता है।
- साहित्य में सवंदेनशीलता तथा समानुभूति का बहुत महत्त्व है। इस कविता में पाठकों को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाकर पर्यावरण-रक्षा के प्रति जागरूकता पैदा की गई है।
- उपभोक्तावाद तथा व्यक्तिगत स्वार्थ मानव-विरोधी भाव हैं। कविता में इनका विरोध करके बहुसंख्यक मानव की रक्षा की भावना मार्मिकता से व्यक्त की गई है।
- जो मानव नहीं है या जड़ है, उसे मनुष्य के रूप में दिखाना मानवीकरण है। इस कविता के उद्देश्य को पूरा करने में मानवीकरण की बहुत बड़ी भूमिका है।
- कविता में उपयुक्त वाक्य-विधान, प्रश्न-शैली, दृश्यात्मकता एवं भावानुकूल भाषा-प्रयोग है।

योग्यता विस्तार

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता की लेखिका निर्मला पुतुल हैं। उनका जन्म 1972 में एक संथाली आदिवासी परिवार में हुआ। निर्मला पुतुल अपनी कविताओं में उस आदिवासी लोक की रचना करती हैं, जो प्रकृति के सबसे अधिक निकट रहता है, उससे आत्मीयता का अनुभव करता है और जो प्रकृति के महत्त्व को सबसे अधिक समझता है। इस प्रकार अपनी कविताओं के माध्यम से निर्मला पुतुल आदिवासी समाज और प्रकृति के अस्तित्त्व को बचाने का प्रयास करती हैं। आज वैश्विक सभ्यता तथा उपभोक्तावाद के दौर में ये दोनों ही संकटग्रस्त हैं। निर्मला पुतुल हमारे एकांगी राष्ट्रीय विकास पर प्रश्नचिह्न लगाकर सभी के लिए विकास की माँग करती हैं। निर्मला पुतुल ने स्त्री-प्रश्नों पर भी कविताएँ लिखी हैं। उनके कविता-संग्रह का नाम है- 'नगाड़े की तरह बजते शब्द'।

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. पर्यावरण का अर्थ लिखिए। हमें पर्यावरण की रक्षा करने का दायित्व क्यों निभाना चाहिए?

2. प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग से होने वाली हानियों का उल्लेख कीजिए।

3. संवेदनशीलता का विस्तार करने में कवियों की क्या भूमिका है- 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। आप किस माध्यम से यह कार्य कर सकते हैं- यह भी लिखिए।

4. पानी के प्रदूषण के प्रमुख कारणों का उल्लेख कीजिए। उन कारणों के निदान के बारे में टिप्पणी कीजिए।

5. 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में मानवीकरण किस प्रकार किया गया है- उल्लेख कीजिए।

6. मनुष्य के प्रकृति-विरोधी व्यवहार को मानव-विरोधी व्यवहार क्यों कहा जा सकता है- उल्लेख कीजिए।

7. 'दिल दहलना', 'हृदय विदारक' और 'छिटकना' का उचित प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य लिखिए।

8. उपयुक्त मिलान कीजिए :

सुनना	बूढ़ी पृथ्वी का दुख
देखना	हवा का ख़ून की उल्टियाँ करना
महसूस करना	नदियों का मुँह ढाँपकर रोना
बतियाना	पहाड़ का सीना दहलना

9. संज्ञा शब्द वे शब्द हैं, जो किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम के लिए प्रयुक्त होते हैं। संज्ञा की विशेषता बताने वाले रूप को विशेषण कहते हैं। क्रिया से किसी कार्य को करने का या किसी स्थिति में होने का बोध होता है। कभी-कभी कार्य अथवा कार्य करने की रीति भी संज्ञा के विशेषण के रूप में होती है। निम्नलिखित में से किस विकल्प में कार्य करने की रीति संज्ञा के विशेषण के रूप में नहीं है-

   (क) कुल्हाड़ियों के वार सहते पेड़

   (ख) बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ

   (ग) मौन समाधि के लिए बैठे पहाड़ का सीना।

   (घ) हवा घर के पिछवाड़े ख़ून की उल्टियाँ करती है।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

14.1

1. (क), 2. (क), 3. (ख), 4. (क) (√), (ख) (√), (ग) (×), (घ) (×)

14.2

1. (क), 2. (क), 3. (क), (√), (ख) (×), (ग) (√), (घ) (√)

14.3

1. (घ), 2. (घ)